[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3641

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

सचित्र जैन पाण्डुलिपियों में रंग की भूमिका (आदिपुराण के सन्दर्भ में)

सृष्टि जैन
शोध छात्रा, ड्राइंग एण्ड पेन्टिग विभाग
दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी) आगरा
Email-jainkanu.4u@gmail.com

हमारे भारतवर्ष में रंग का बहुत महत्व है रंग के बिना किसी भी वस्तु, व्यक्ति का कोई आधार नहीं है सही मायने में रंग ही हमको एक दूसरे के स्वरूप को बताते हैं। वर्ण या रंग का अर्थ पदार्थ की रंगत से है लाल, पीला, नीला। इनके मिश्रण के आधार पर वर्ण के अनेक भेद किये जा सकते हैं। भारतदेश एक धर्म प्रधान देश है जिसमें विभिन्न मान्यतायें हैं। धर्म के साथ पाण्डुलिपियों का विशेष सम्बन्ध है पाण्डुलिपियाँ हमारे गुरूओं की मोक्ष साधना का उत्तम साधन है उनमें से एक है सचित्र जैन पाण्डुलिपि आदिपुराण। जिसकी रचना आचार्य पुष्पदंत ने की है पाण्डुलिपि में भगवान ऋषभदेव (प्रथम तीर्थंकर) के जीवन चरित को चित्रों के माध्यम से दर्शाया गया है। प्रस्तुत पाण्डुलिपि जयपुर के दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर तेरापंथियान के शास्त्र भण्डार में संग्रहित है। इसका लिपिकाल 1597 (ई. सन् 1540) फाल्गुन शुक्ल 13 है। इसका लेखन कार्य विश्नुदास नाम के ब्राह्मण व्यक्ति के द्वारा किया गया और चित्र हरिनाथ कायस्थ और उनके परिवार द्वारा बनाये गये हैं। 687 पृष्ठों की इस पाण्डुलिपि में तीर्थंकर ऋषभदेव के जीवनचरित के अनुरूप 541 रंगीन चित्र हैं। मुख्य रूप से चित्र में खनिज रंग (वनस्पति रसों के मिश्रण से निर्मित अर्थात् मिट्टी पत्थर वृक्षों की छाल आदि से बने रंग) का प्रयोग सर्वाधिक किया गया है। मुख्यतः गेरू (लाल) हिरोंजी (हरा) रामरज (पीला) स्याही (काला) रंग प्रमुख रूप से प्रयोग हुआ है। पाण्डुलिपि में प्रयुक्त चारों रंग जैन धर्म के प्रतीक हैं जैसे कि लाल रंग (गेरू) हमारी आंतरिक दृष्टि यानि कि जैन धर्म में प्रयुक्त सिद्ध परमेष्टी को दर्शाता है। जिन्होंने मोक्ष को प्राप्त कर लिया है। पीला रंग हमारे मन को सक्रिय करता है। हरा रंग शांति देता है। आत्मसाक्षात्कार में सहायक होता है। नीला रंग अवशोषक होता है वह बाहर के प्रभाव को अंदर नहीं जाने देता। काला रंग पाण्डुलिपियों में लेखनकार्य के लिये प्रयोग में लाया जाता था। लेखन कार्य के लिये स्याही तीन विधियों से बनायी जाती थी।

प्रथम–
पिचुमंद नामक झाड़ी का गोंद और बेल को तिल के तेल में जलाकर काजल बनाया जाय तत्पश्चात् उसे लाख के जल के साथ लोहे के बर्तन में भली भाँति भृंगराज तथा भल्लात्तक के रस के साथ घोंटने पर स्याही बनती है।

द्वितीय–
काजल की आधी मात्रा में गोंद तथा गोंद की आधी मात्रा में बेल लेकर ताँबे के बर्तन में लाख के रस के साथ घोंटें।

तृतीय–
बेल तथा उससे दो गुना गोंद से दो गुना काजल लेकर (लगभग) 6 घण्टों तक घोंटने पर व्रज के समान पक्की स्याही बन जाती है इसप्रकार आदिपुराण में लिखने के लिये स्याही का प्रयोग हुआ है। आदिपुराण के चित्रों में से कुछ चित्रों के माध्यम से मैने रंगों की महत्ता के बारे में प्रकाश डाला है। जो कि इसप्रकार है।

प्रथम पत्र–

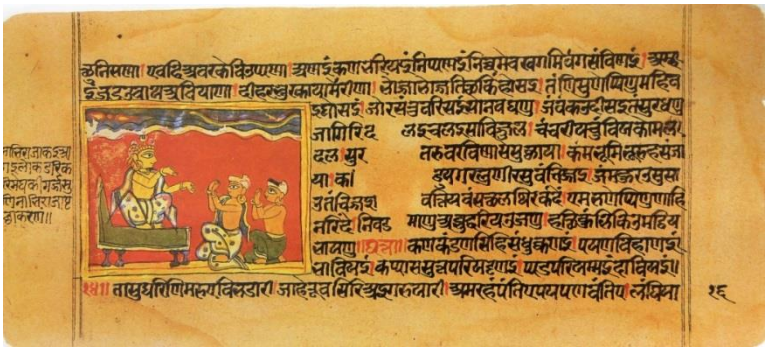

इस चित्र में राजा नाभिराय अपनी प्रजा को (व्यापारिक) कल्पवृक्ष के समाप्त हो जाने के बाद जीवनचर्या व्यतीत करने के लिये आसि, मसि, आदि का ज्ञान दे रहे हैं। पत्र में चित्र की रचना बॉयी तरफ की गयी है मुख्य आकृति को पीले रंग से तथा अपने स्थान से ऊँचा दिखाया गया है। पीला रंग उनके शरीर की सक्रियता को दर्शा रहा है।

चित्र संख्या 1

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

द्वितीय पत्र–

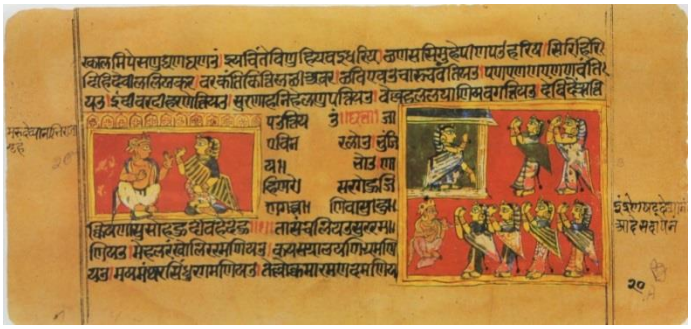

चित्र संख्या 2

पत्र में चित्रित चित्र में एक तरफ राजा नाभिराय रानी मरूदेवी के साथ भोगविलास में मग्न हैं वहीं दूसरी तरफ इन्द्र व इन्द्राणी अपनी दासियों व सखियों को उनकी सेवा करने का आदेश दे रही हैं कह रही हैं कि तीन लोक के नाथ रानी मरूदेवी के गर्भ में आने वाले हैं। इस चित्र में लाल रंग से राजा नाभिराय की मनःस्थति को दिखाया है वहीं दूसरी तरफ स्वर्ग में यह जानकर सब खुश है एवं शांत हैं कि तीन लोक के नाथ आदिनाथ भगवान माता मरूदेवी के गर्भ में आने वाले हैं। हरे रंग को जो कि शांति का प्रतीक है प्रदर्शित किया गया है।

तृतीय पत्र–

चित्र संख्या 3

तृतीय पत्र में सौधर्म इन्द्र अपनी देवी धृति, कृति आदि देवियों को भरत क्षेत्र जाकर रानी मरूदेवी की सेवा करने का आदेश दे रहे हैं स्वयं इन्द्र के शरीर पर चित्रकार ने आँखों को चित्रित किया है। जो कि यह दर्शाता है कि इन्द्र ने 1008 आखों से भगवान को देखा था। इस चित्र में मुख्य लाल, पीला, नीला रंगों से चित्र को चित्रित किया गया है।

चतुर्थ पत्र–

चित्र संख्या 4

प्रस्तुत पत्र के चित्र में भगवान आदिनाथ की स्तुती की गयी है जो कि मुख्य आकृति होने से पीले रंग में चित्रित है।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

पंचम पत्र–

चित्र संख्या 5

चित्र में राजा श्रेयांस मुनि आदिनाथ को गन्ने के रस का आहार दे रहे हैं एवं पत्र के दॉयी तरफ चित्रित चित्र में राजा सोमप्रभ बंधे हुये पशुओं को खोल रहे हैं जिससे हिंसा का पाप न लगे। इस चित्र में भी पीले, लाल, नीला और हरे रंग को चित्रित किया है।

इस प्रकार आदिपुराण में चित्रित चित्रों में मुख्यतः लाल, पीले नीले रंग का बहुधा प्रयोग हुआ है। कागज काल में चित्रित इस पाण्डुलिपि सुनहरे रंग, नीला एवं लाजवर्द रंगों का प्रयोग हुआ है नीला लैपिस का प्रयोग हुआ है नीला लैपिस का प्रयोग पृष्ठभुमि के लिये किया गया है। कुछ विद्वानों का मानना है कि रंगों का प्रयोग ईरानी पोथियों से आया है। मूलरूप से अधिकांश पोथियाँ काले रंग की स्याही से लिखी गयी हैं जिसमें बीच–बीच में लाल रंग के कागज पर लिखी गयी है प्रस्तुत पाण्डुलिपि वर्तमान में अत्यन्त जीर्ण अवस्था में है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि–

1– मूल पाण्डुलिपि आचार्य पुष्पदंत द्वारा रचित आदिपुराण
2– कुमार, शैलेन्द्र, उत्तर भारतीय पोथी चित्रकला, पृष्ठ संख्या, 51,52,53, प्रकाशक बी–33/33–ए–1– न्यू साकेत कालोनी बी.एच.यू वाराणसी–वर्ष, 2009
3– गर्ग, कमला, यशोधरचरित सचित्र पाण्डुलिपियाँ पृष्ठ संख्या– 70 प्रकाशक – भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली,वर्ष–1991
4– अग्रवाल, रामवतार, कला के मूल तत्व, मेरठ– वर्ष–1974
5– गैरोला, वाचस्पति, भारतीय चित्रकला, इलाहबाद ,वर्ष 1963
6– खन्ना, नवीनए रंग और आप, प्रकाशक अनुपम बुक्स, दिल्ली, वर्ष, 1986

Websites-

1 *www.http/jainmanuscript.color.co.in*
2 *www.http/jaindecoratedmanuscriptpaintings*